सापौन टौरिया, जो माननीया उमाभारती जी के निवास ग्राम डूंडा से 4 कि.मी. एवं अजनौर से 4 कि.मी. दूर रोड पर स्थित है। यहाँ क्वार्टज की 200 मीटर लज़्बी 50 मीटर ऊँची पहाड़ी है जिसमें क्वार्टज के कई उपकरण प्राप्त हुए जिनकी आकृति 87 ×81.7 ×45 मिमी. 70.6 ×55 ×25 मि.मी. एवं 130.5 ×61 ×39 मि.मी. है। इसी प्रकार मैनवार हिल्स से भी कई उपकरण प्राप्त हुए हैं।

निष्कर्ष-

इस प्रकार नवागढ़ क्षेत्र की प्रागैतिहासिक विरासत के साक्ष्य लोअर पेलियोलिथिक (2 से 5 लाख वर्ष) से अपर पेलियोलिथिक तक के पाषाण प्राप्त हुए हैं, नवागढ़ की एक और विशेषता है कि यहाँ पाषाण काल के साक्ष्यों के साथ कपमार्क, रॉक पेंटिग्स, रॉक कट इमेज भी मिले हैं।

हजारों वर्ष प्राचीन शैलाश्रयों में जैन संतों के साधना स्थल एवं शयनस्थल यह सिद्ध करते हैं कि नवागढ़ की पहाड़ियों में जैन संतों का आवागमन हजारों वर्षों से निरंतर हो रहा है। यहाँ से प्राप्त मिट्टी एवं पाषाण के मनके यहाँ विकसित मानव संस्कृति के साक्ष्य हैं। कला शिल्पानुसार यहाँ गुप्तकाल, प्रतिहार काल, चन्देल काल से वर्तमान काल तक के प्रमाण स्पष्ट रूपेण संगृहीत हैं। यहाँ की पुराताज़्विक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत विशिष्ट एवं विलक्षण हैं। इनका संरक्षण अतिशीघ्र होना चाहिए, अन्यथा इनका मात्र इतिहास में ही नाम रहेगा।

गुरुकुल परज़्परा का संवाहक- नवागढ़ (नंदपुर)

- डॉ. श्रेयांस कुमार जैन

भारतीय संस्कृति गुरु-शिष्य परज़्परा की पोषक है अर्थात् पुरातनकाल से ही गुरुकुलों में गुरु अपने शिष्यों को उनकी योग्यतानुसार संस्कारारोपण करके उनके व्यक्तित्व का परिमार्जन करते थे। इतिहास इसका साक्षी है।[1] राजकीय भोगविलास से परे प्राकृतिक सुरज़्य उपवन में स्थित आश्रमों में राजपुत्र से लेकर सामान्य विद्यार्थी तक विद्याध्ययन करते थे।[2] गुरुकुल के शिष्यों में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होता था। सामान्यतः दैनिक कार्य स्वयं ही सज़्पादित करने के साथ-साथ जंगल से लकड़ी लाना, रसोई तैयार करना, सफाई करना, बागवानी, गुरुओं के समस्त कार्य में सहयोग करना सभी की दिनचर्या का अंग होता था।

अनवद्या हि विद्या स्याल्लोकद्वयफलावहा।[3]

निर्दोष, अच्छी तरह से परिश्रम पूर्वक अज़्यस्त विद्या ही ऐहिक और पारलौकिक कार्यों को सफल करती है अर्थात् जिस शिक्षा से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास होता है वही यथार्थ से अनवद्य शिक्षा है। (क्षत्रचूड़ामणि 3/45 आ. वादीभ सिंह सूरि)

नंदपुर वर्तमान नवागढ़[4] जिला ललितपुर (उ.प्र.) में संगृहीत कलात्मक शिल्पों का पुरातज़्ववेज़ाओं द्वारा सूक्ष्म अध्ययन से ऐसे तथ्य सामने आये हैं, जो इसे विशाल गुरुकुल या शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थापित करते हैं।

बगाज की टौरिया पर स्थित विशेष द्विभागीय गुफा का 11 जून 2016 में उद्घाटन करते समय चंवरधारिणी इंद्राणी, अंबिका एवं साबु पाहल अंकित शिलाखण्ड प्राप्त हुए।[5] दोनों भागों का नैसर्गिक आकार विलक्षण है। द्विभागीय गुफा का फर्श 25×20 फुट है, जो गुफा के भीतर से बाहर तक एक ही पाषाण खण्ड से निर्मित है, परन्तु विशेषता यह है कि भीतरी भाग बाहरी भाग से स्वभाविक रूप से ऊँचा है अर्थात् बहिर्भाग की अपेक्षा दोनों गुफा का भीतरी भाग क्रमशः ऊँचा-नीचा है। जहाँ वरिष्ठ आचार्य एवं उपाध्याय गुफा के भीतर बैठकर बाहर बैठे शिष्यों को विद्याध्ययन कराते हों।

क्षेत्र से 3 कि.मी. दूर पश्चिम में स्थित फाइटोन शिलाओं के निकट जैन पहाड़ी में स्थित गुफा से 28.4.2014 को प्राप्त संवत् 1188 (सन् 1131) की उपाध्याय परमेष्ठी की प्रशस्त एवं मनोज्ञ[6] प्रतिमा जिसकी मुद्रा सुखासन है, बायें हाथ में लज़्बायमान शास्त्र, दाहिना हाथ ध्यान मुद्रा में है एवं जिसकी भुजा में पिच्छी दबी हुई है। मुखाकृति सौज़्य, विशाल नयन एवं लज़्बकर्ण के साथ अत्यन्त मनोज्ञ है। गहरी नाभि सहित उदर एवं पुष्ट वक्षस्थल इनकी सुदृढ़ संहनन के साथ दीर्घ साधना को दर्शाते हैं।

यह उपाध्याय बिज़्ब देवगढ़ क्षेत्र के सुप्रसिद्ध उपाध्याय बिज़्ब संवत् 1333 (सन् 1276) से 145 वर्ष प्राचीन है। देवगढ़ क्षेत्र में आचार्य एवं उपाध्याय परमेष्ठी द्वारा विद्याध्ययन (पाठशाला) के कई शिल्प संगृहीत हैं।[7]

सिर विहीन कुमार युगल कृति का शिल्प, आभूषण सज्जा, देहाकृति एवं सौष्ठव अत्यन्त चिज़ाकर्षक है। एक शिलाखण्ड में दोनों कुमारों में अग्रज एवं अनुज दृष्टव्य हैं। दोनों के गलहार, स्तनहार, बाजूबंध, कटिबंध आदि अन्य अलंकरण अत्यन्त सूक्ष्मता से गढ़े गये हैं। हीयमान कटि प्रदेश, सुदीर्घ पुष्ट वक्षस्थल उत्कृष्ट शिल्प की अभिव्यक्ति हैं।[8] अग्रज कुमार के बायें हाथ में लज़्बायमान शास्त्र पत्र एवं दाहिने हाथ में विशेष लेखनी इनके विद्याध्ययन के संकल्प को दर्शाती है।[9]

जैन इतिहास में विद्याध्ययन के प्रति संकल्पित एवं जिनवाणी के प्रति समर्पित उत्कृष्ट एवं विलक्षण मेधा-शक्ति वाले कुमार अकलंक एवं निकलंक प्रसिद्ध रहे हैं। नंदपुर वर्तमान नवागढ़ में स्थापित गुरुकुल एवं जिनवाणी के प्रति निकलंक के बलिदान को दर्शाने हेतु इस शिल्प की विशेष रूप से स्थापना की गई प्रतीत होती है।

कुमार अकलंक-निकलंक ने कांचीपुरी के बौद्ध आश्रम में गुप्तरूप से विद्याध्ययन किया। कुमार अकलंक एकपाठी एवं अनुज निकलंक द्विपाठी थे। इन कुमारों के जैन ज्ञात होते ही उन्हें कारागृह में डाल दिया गया। जहाँ से वे युक्तिपूर्वक भाग निकले, घुड़सवार सैनिकों द्वारा पकड़े जाने के भय से अग्रज अकलंक ने तालाब में छिपकर अपनी रक्षा की। अनुज निकलंक तालाब के पास धोबी पुत्र के साथ सैनिकों द्वारा मरण को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् अकलंक ने विद्याध्ययन करके बौद्धों को शास्त्रार्थ में कई जगह पराजित करके जैनधर्म की प्रभावना की। इस प्रकार जिनवाणी के लिए निकलंक का बलिदान जगत्प्रसिद्ध है।[10]

सोजना (जिला ललितपुर) की बावड़ी से प्राप्त 4 मानस्तज़्भ शिल्पकला की अनुपम कृति हैं।[11] 4 फुट उजुंग मानस्तज़्भ संवत् 1203 में प्रतिष्ठित कराये गये हैं। मानस्तंभ के शीर्ष पर तीन तरफ अरिहंत बिज़्ब एवं एक तरफ उपाध्याय परमेष्ठी उत्कीर्ण हैं जो वहाँ की शैक्षणिक गतिविधियों को दर्शाते हैं।

इन विशेष शिल्प साक्ष्यों से सिद्ध होता है कि नंदपुर वर्तमान नवागढ़ में प्राचीनकाल में विशाल गुरुकुल रहा होगा, जहाँ सैकड़ों श्रमण वहाँ की गुफाओं में आत्मसाधना करते हुए विद्यार्थियों को धर्माराधना एवं लौकिक शिक्षा प्रदान करके उनमें संस्कारारोपण करते रहे हैं।

क्षुल्लक चिदानंद जी महाराज ने नवागढ़ में सन् 1965 एवं 1966 में ब्र. आत्मानंद जी नादैल, ब्र. किशोरीलाल जी कुज़्हैडी (बाजा भैया) एवं ब्र भगवानदास जी गुढ़ा के साथ दो चातुर्मास किए।[12] इस अवधि में क्षुल्लक जी ने डूंडा, मैनवार, सौजना, गुढ़ा के श्रावकों को एवं नवागढ़ के जिज्ञासु अजैनों को णमोकार मंत्र, छहढाला, तज़्वार्थसूत्र का स्वाध्याय इन पहाड़ियों में बैठकर कराया। क्षुल्लक जी से स्वाध्याय करने वालों में स्वरूपचन्द्र पठया, सेठ हल्काईलाल, भागचंद्र मैनवार, मनकू सिंघई ककरवाहा, सुखलाल सौजना, राजाराम लज़्बरदार, भगवानदास नापित, रामदीन प्रजापति नवागढ़ आदि मुज़्य हैं। आपकी व्याकरण पुष्ट थी, जिससे अध्ययन शैली अत्यन्त सरल एवं रुचिकर होने से सामान्यजन भी जिनवाणी के गूढ़ रहस्यों को हृदयंगम कर लेते थे।

नवागढ़ (नंदपुर) की पहाड़ियों, टीलों एवं गुफाओं में कितने रहस्य छिपे हैं- कह नहीं सकते ? परन्तु इतना अवश्य है कि यहाँ विशेष अन्वेषण अनिवार्य है, जिससे जैन सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक धरोहर हमारे समक्ष प्रकट हो सके।

संदर्भः

1. संस्कृत जैन प्रबन्ध में प्रतिपादित शिक्षा पद्धति, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री
2. संस्कृत जैन प्रबन्ध काव्यों में प्रतिपादित शिक्षा पद्धति, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री
3. क्षेत्र चूड़ामणि 3/45, आ. वादीभ सिंह सूरि
4. 1 प्राचीन जैनतीर्थ नन्दपुर शिलालेखों के दर्पण में, हरिविष्णु अवस्थी
   2 प्राचीन शिलालेख अहारजी, पं. गोविन्ददास जैन कोठिया न्यायतीर्थ

3 अहार क्षेत्र के शिलालेख, डॉ. कस्तूरचंद जैन 'सुमन'

4 श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र नावई नवागढ़ नंदपुर- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

5. नवागढ़ (नंदपुर) इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

6. 1 प्राचीन जैनतीर्थ नन्दपुर शिलालेखों के दर्पण में, हरिविष्णु अवस्थी

2 श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़, नंदपुर-डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

7. 1 जैन कलातीर्थ देवगढ़-प्रो. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी, डॉ. शान्तिस्वरूप सिन्हा

2. देवगढ़ की जैन कला एक सांस्कृतिक अध्ययन, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

8. नवागढ़ (नंदपुर) इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

9. संतों की पुरातन साधना स्थली, नवागढ़, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

10. तीर्थंकर महावीर एवं उनकी आचार्य परज़्परा भाग 2, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

11. 1 श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र नावई, नवागढ़, नंदपुर- डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी

2 श्री अखिल भा. दिग. जैन गोलापूर्व डायरेज़्टरी, पं. मोहनलाल काव्यतीर्थ

3 नवागढ़- एक महज़्वपूर्ण मध्यकालीन जैन तीर्थ, नीरज जैन सतना

12. 1 नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास, हरिविष्णु अवस्थी

2 संतों की पुरातन साधना स्थली, प्रो. भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

नवागढ़ के बीहड़ में शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक शैलचित्र

- डॉ. स्नेहरानी जैन

सागर टीकमगढ़ मार्ग पर अवस्थित बड़ागाँव के समीप नावई ग्राम के दक्षिणोज़र में लावाजन्य बीहड़ जंगल में बोल्डरों के मध्य ऊँचाई पर कुछ गुफाएँ, शैलाश्रय, बावड़ियाँ टीले खोजने की जानकारी ब्र. जयकुमार 'निशांत' भैया ने दी। एक छोटे शैलाश्रय में कुछ शैलचित्र होने की बात कही, कुछ चित्र भी दिखलाए जिनका अवलोकन करना मुझे अति आवश्यक लगा कारण था छोटा सा शैलाश्रय और उसमें अंकित लाल रंग से बने कुछ संकेत जो काल से वहाँ पर हैं, जो पानी से धुलते नहीं ना ही रगड़ने पर मिटते हैं। उल्टा गीला होने पर दिखने में और भी स्पष्ट हो जाते हैं। उनका सर्वेक्षण करना मुझे अति आवश्यक लगा ज़्योंकि उनके लक्षण मुझे भीमबैठिका शैलाश्रयों का स्मरण करा गए ।

बिना कोई देरी किए भोजनोपरांत हम सागर सें एक कार लेकर दिन रहते नवागढ़ दिगंबर जैन मंदिर परिसर में पहुँच गए और चार पाँच मोटर बाईकों पर लगभग दस ग्यारह व्यक्ति सरपंच श्री रामनारायण यादव को साथ लेकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ गए। किसी काल में लाखों वर्ष पूर्व यहाँ छोटे-छोटे ज्वालामुखी बुदबुदाकर लावा के छींटे फेकते रहे हैं जिनसे सतह पर यहाँ वहाँ बोल्डरों का जमाव दीखता है।

ग्राम नावई की जनसंज़्या लगभग पन्द्रह सौ के आसपास होगी। सुनते हैं कि पिछ्ली सदी के मध्य पंडित गुलाबचंद जी'पुष्प' को एक टीले पर खड़े इमली के एक विशाल के नीचे जिन बिंबों केकुछ खंडित अवशेष पड़े दिखे जहाँ एक भक्त नारियल हाथ में रखें मनौती माँग रहा था । पूछने पर उन्हें जानकारी मिली कि उस स्थान की धूल भी मनोकामना पूर्ति हेतु सातिशयी है। 'पुष्प' जी ने किसी तरह उस इमली के पेड़ को हटवा कर वहाँ खुदाई करवाई तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। खंडित जिन बिंबों के अंबार के हटाए जाने धरती से दस फीट नीचे फर्शियों को जोड़कर बनाया एक बड़ा प्रस्तर फलक दिखा जिस पर बीच में कमल और चारों कोनों पर कीर्तिमुख बने हैं। उन प्रस्तर के हटाए जाने पर अरहनाथ भगवान की अति सुंदर खड़्गासित कायोत्सर्गी सातिशयी प्रतिमा मिली जो उसी स्थान पर जमीन में दस फीट नीच भौंयरे